डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-सातवां | नवम्बर-2010 | मासिक पत्रिका

आवश्यक सूचना 4

अंदर का प्रकाश 5
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

प्रार्थना 19
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

मन की लहरें 24
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के
मुखारविन्द से अनमोल संदेश
(साँपला)

प्रेम-विरह 27
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
के मुखारविन्द से अनमोल वचन

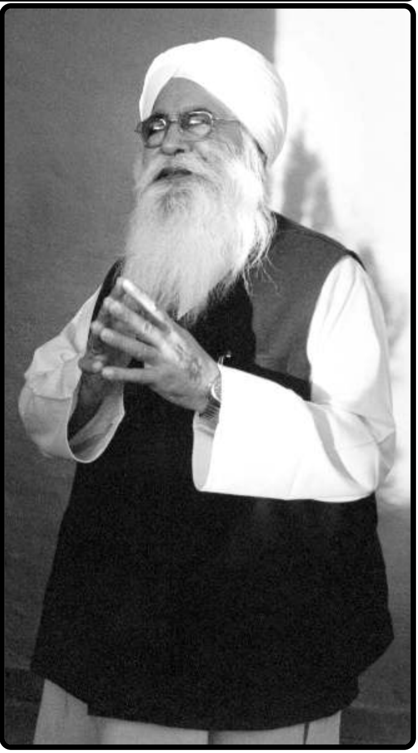

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाया। **प्रकाशित करने का स्थान :** 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान) फोन - 0 99 50 55 66 71 (राजस्थान) व 0 98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया

उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 104 | Website : www.ajaibbani.org

आवश्यक सूचना

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया से जुलाई - 2001 से मासिक पत्रिका 'अजायब बानी' प्रकाशित हो रही है जिससे संगत लाभ उठा रही है। बहुत से प्रेमियों को यह मासिक पत्रिका डाक से भेजी जाती है। कई बार पता बदलने की वजह से कई प्रेमियों की डाक वापिस आ जाती है या उन तक नहीं पहुँचती जिसके बारे में हमें पता नहीं चल पाता।

जो प्रेमी डाक द्वारा यह पत्रिका प्राप्त कर रहे हैं उनसे निवेदन है कि वे साल में एक बार अवश्य सूचित करें कि उन्हें यह पत्रिका हर माह मिल रही है ताकि उनकी डाक जारी रखी जा सके। आपका क्रमांक पत्रिका के लिफाफे पर लिखा होता है कृपया सूचित करते समय अपना क्रमांक अवश्य लिखें।

Mr. Rajeev Kocher, (242)
220, Bhera Enclave,
Paschim Vihar,

NEW DELHI 110 087

पत्रिका जारी रखने के लिए आप नीचे लिखे पते पर पत्र द्वारा या ई-मेल या टेलिफोन पर सूचित कर सकते हैं। सूचित करने की अंतिम तिथि 15 दिसम्बर 2010 है। आशा करते हैं कि आप समय पर सूचित करेंगे ताकि आपकी डाक जारी रखी जा सके।

आपसे सहयोग की आशा करते हुए।

अजायब बानी

1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान)

E-mail: dhanajaibs@yahoo.co.in

Phone: 0 99 50 55 66 71 & 0 98 71 50 19 99

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अंदर का प्रकाश

कबीर साहब की बानी

अहमदाबाद

सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। हम दुनियां के जीवों ने अगर कारोबार, खेती-बाड़ी या दुकानदारी का कोई काम करना हो तो इनको शुरू करने के लिए किसी शुभ महूर्त की सोचते हैं। पंडितों-भाईयों से भी पूछते हैं कि कौन सा दिन शुभ है? कबीर साहब कहते हैं, ''वही दिन शुभ है जिस दिन हमारा मिलाप किसी मालिक के प्यारे के साथ हो जाए और हमें 'नामदान' मिल जाए।''

सन्त हमें बताते हैं कि अंदर के परम आनन्द का मंडल सन्तों का निज-धाम है। वहाँ गर्मी-सर्दी, सूरज-चन्द्रमा की पहुँच नहीं, वहाँ के रस की तुलना संसार के किसी खट्टे-मीठे रस से नहीं की जा सकती। वहाँ बिना किसी लैम्प के प्रकाश हो रहा है। अंदर के मंडल में जो शब्द-धुन हो रही है उसकी तुलना बाहर के किसी संगीत से नहीं की जा सकती; वह मंडल कहने-सुनने में नहीं आता। अभ्यासी को स्वयं अपनी आँखों से देखकर अनुभव करना पड़ता है।

मालिक हम पर रहम करके अपने प्यारे बच्चे सन्तों को हमारे लिए भेजता है। सन्त मालिक की मौज में इस अन्धों और भ्रमों की नगरी में आते हैं, वे आराम और सुखों की नगरी से आते हैं। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

बुल्लया साडा ओत्थे वासा जित्थे बहुते अन्ने,
ना साडी कोई कदर पछाणें ना सानूं कोई मन्ने।

गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''मैंने पिछले जन्मों में इतनी तपस्या की कि मैं दो से एक रूप हो गया। मैं परमात्मा के चरणों में

लीन था मेरा इस संसार में आने को दिल नहीं चाहता था।'' परमात्मा ने कहा, ''मैं तुझे अपना प्यारा बेटा समझकर भेज रहा हूँ।'' मैं परमात्मा के हुक्म को टाल नहीं सका। आप जानते हैं कि समझदार पिता अपना फर्ज निभाता है; वह अपने बेटे की हर जरूरत को पूरा करता है।

मैं बताया करता हूँ जिसका एक बार परमात्मा से मिलाप हो जाए फिर वह बिछोड़ा नहीं सह सकता। जिसे एक बार नाम-अमृत पीने को मिल जाए वह फिर विषय-विकारों के जहर को कभी नहीं पिऐगा। जिस देश में मौत-पैदाईश नहीं दुःख नहीं, प्यार ही प्यार है वह फिर इस दुखों की दुनियां में क्यों आऐगा?

जब स्वामी जी महाराज, गुरु नानकदेव जी इस संसार में आए तो दुनियां ने उनका विरोध किया। कबीर साहब के समय में दो फिरके थे। आज तो सात-आठ सौ फिरके हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि सन्तों के लिए संदेश देना कितना मुश्किल है। सन्तों का हर किस्म के आदमी के साथ वास्ता पड़ता है। बाल की खाल उतारने वाले भी आते हैं और प्रेमी भी आते हैं।

जब मैं पहले विश्व टूर पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया वहाँ एक वकील मुझसे मिलने आया, उसने कहा कि मैं परमात्मा का प्रचार करने वालों को माफ नहीं करता; आपको तो मैं माफ करूंगा ही नहीं। आप जानते हैं कि मैं अंग्रेजी जुबान नहीं जानता। पप्पू ने जब यह सुना तो उसका रंग पीला पड़ गया। मैंने उससे पूछा कि यह क्या कह रहा है? मैंने हँसकर उससे कहा कि माफी तो सन्तों के पास होती है अगर तेरे पास माफी हो तभी दे सकता है? इसके बाद उसकी पत्नी ने 'नाम' लिया। उसने खुद भी कोशिश की मगर इंसान पुरानी आदतें नहीं छोड़ सकता फिर उसने हमसे बहुत प्यार किया जिसकी मेरे दिल में कद्र है। कबीर साहब कहते हैं:

कोई आवे भाव ले कोई ले अभाव,
सन्त दोहां नूं पोसदे भाव न गिने अभाव।

अगर कोई पेड़ को पत्थर मारता है तो भी पेड़ खाने के लिए उसे अपना फल और छाया देता है। जब सन्त संसार में आकर उपदेश देते हैं तो दुनियां को उनका उपदेश कड़वा लगता है। हम विषय-विकारों, शराबों-कबाबों में मस्त हैं। सन्त हमें इनसे बचने के लिए कहते हैं। आत्मा आदिकाल से कितनी बार पशु-पक्षियों की योनि से हो आई है, कितनी बार पेड़ बनी है कितनी बार कीड़ा बनकर धरती पर रेंग चुकी है। मालूम ही नहीं कितनी बार किसी की पत्नी बनी कितनी बार किसका पति बनी? कबीर साहब कहते हैं:

अस्थावर जंगम कीट पतंगा, अनक जन्म कीन्हें बहु रंगा,
ऐसे घर हम बहुत बसाए, जब हम राम गर्भ होए आए।

हम किसी भी देह में आए पक्षी बने तो घौंसला बनाना पड़ा। साँप, चूहा बने तो बिल खोदनी पड़ी। इंसान के जामें में आए तो अच्छा महल बना लिया लेकिन सदा घौंसले, बिलों और महल में नहीं रह सके हमेशा ही बिस्तर गोल करना पड़ा। हम तीर्थों पर स्नान करने से समझते हैं कि हमारे पाप समाप्त हो गए। कबीर साहब कहते हैं:

जल का मज्जन जे गत होवे, नित-नित मेंढक नहावे,
जैसे मेंढक तैसे ओ नर, फिर-फिर योनि आवे।

मेंढक मछलियां उन्हीं तलाबों में रह रही हैं अगर उनमें रहने वाले मुक्त नहीं होते तो हम साल दो साल बाद एक बार उन तलाबों में स्नान करके किस तरह मुक्त होने की उम्मीद कर सकते हैं? कबीर साहब के समय में यह धारणा थी कि बनारस में देह छोड़ी जाए तो स्वर्ग में जाते हैं अगर मगहर(बनारस के नज़दीक) में देह छोड़ी जाए तो नर्क में जाते हैं।

सगल जन्म शिवपुरी गँवाया, मरती वार मगहर उठ धाया।

कबीर साहब नें इस भ्रम को दूर करने के लिए अपना आखिरी समय मगहर में बिताया। आप कहते हैं जगह का कोई दोष नहीं होता।

हरि का सन्त मरे हड़म्बा, तिन सगल सेन्त तराई।

अगर मालिक का प्यारा हड़म्बा में भी शरीर छोड़ता है वह खुद तो तरता ही है उसकी संगत भी तर जाती है।

जैसी लौ पहले लग्गी, तैसी निबहे ओड़,
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़।

अगर हमारे मन में कपट है हमने सारी ज़िंदगी चोरियां-ठग्गियां की हैं और मौत के समय हम बनारस चले जाएं तो किस तरह मुक्ति होगी? हम लोग कर्मकांडो में फँसे होते हैं लेकिन जब सन्त हमें समझाते हैं तो हम उनका विरोध करने लग जाते हैं। कबीर साहब के साथ भी बहुत भद्दे मजाक किए गए। आपको जंजीरो से बाँधकर गंगा में फेंका गया, अग्नि में जलाया गया, आपकी गठरी बनाकर हाथी के आगे फेंका गया। आप कहते हैं:

क्या अपराध सन्त हैं कीन्हा, बाँध पोट कुंच्चर को दीन्हा,
कुंच्चर पोट ले ले नमस्कारे, बूझे नहीं काजी अंधियारे।

सच का संदेश सन्तों के जिम्में है। सन्तों को सच का संदेश देना ही पड़ता है दुनियां तो झूठ से भरी हुई है। जब सन्त सच कहते हैं तो हमें थोड़ा सा कड़वा लगता है। बुल्लेशाह ने भी कहा है, ''अगर मैं सच कहता हूँ तो भांभड़ मचता है अगर झूठ कहता हूँ तो कुछ पल्ले नहीं रहता।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जीव अचेत न चेते भाई, घर सुख छोड़ वन-वन भटकाई।

यह जीव अचेत है सोया हुआ है। संसार की किसी वस्तु में सुख-शान्ति नहीं। ख्याल आता है बच्चे बड़े होंगे सुख-शान्ति होगी! हम सुख की खातिर अच्छा घर बनाते हैं कि आराम से रहेंगे। घर बनकर तैयार होता है मालिक आवाज़ लगा लेता है, बिमारी घेर लेती है जब हम बीमार होते हैं तो वही घर भद्दा महसूस होता है। बुढ़ापा आते ही आँख, कान, जुबान, घुटने जवाब दे जाते हैं। भीखन शाह कहते हैं:

नैयनों नीर बहे तन खीना, भए केश दुधवानी,
हृदा कंठ शब्द नी उचरे, अब क्या करे प्राणी,
राम राय होय वैध बनवारी, अपने सन्ता लेय उभारी।

अगर भक्ति में ज़िंदगी लगाई है तो परमात्मा रक्षा करता है अगर सारी ज़िंदगी ऐबों में गँवाकर बुढ़ापे में हम सोचें कि हम राम-राम कह लेंगे या 'नाम' की तरफ आ जाएंगे तो यह हमारी भूल है। पिछले महीने एक सतसंगी परिवार एक बूढ़े को लेकर मेरे पास आए। वह बूढ़ा ऊपर चौबारे तक नहीं चढ़ सकता था। मैं उससे मिलने नीचे ही आ गया। मैंने उस बूढ़े से कहा, ''बाबा! राम-राम बोल।'' उसने कहा, ''मैं मर रहा हूँ तुझे राम की पड़ी है।''

आप सोचकर देखें! उस समय परमात्मा का नाम जुबान से नहीं निकलता क्योंकि सारी ज़िंदगी दुनियां की आशाएं रखी होती है वही हमारे दिमाग में रहती है अगर बिल्ली सारी ज़िंदगी चूहे खाए और अन्त समय में चाहे कि मैं सन्तनी बन जाऊंगी यह कैसे हो सकता है?

बाबा बिशनदास जी एक बिल्ली की मिसाल दिया करते थे। एक पंडित ने एक बिल्ली को ऐसी प्रेक्टिस करवाई हुई थी कि जब वह कथा करता तो वह उस बिल्ली के सिर के ऊपर एक दीपक जलाकर रख देता था। वह बिल्ली चुपचाप कथा सुनती रहती थी। लोगों के लिए यह बहुत अचरज था कि पंडित के पास कोई जादू है। एक समझदार व्यक्ति बड़ी होशियारी से चूहा पकड़कर ले आया। जब उसने बिल्ली को चूहा दिखाया तो बिल्ली दीपक गिराकर चूहे पर झपट पड़ी।

हम लोग सन्त-महात्मा बनकर बातें तो कर लेते हैं लेकिन जब हमें माया-रूपी चूहा दिखता है तो हम फौरन झपट पड़ते हैं। हमारे अंदर विषय-विकारों की आग भड़क उठती है। सन्त हम डूबते हुओं को बचाते हैं जो हमें कड़वा लगता है। महाराज सावन कहा करते थे, ''अगर बीमार को मिश्री दें तो वह कहता है इसे दूर ले जाओ यह कड़वी है। मिश्री तो मीठी है लेकिन बीमार के मुँह का जायका खराब है।''

सन्त हमें नाम जपने का उपदेश देते हैं कि इसी में आपका फायदा है। आम समाज यह भरोसा करवाते हैं कि मरने के बाद स्वर्गों में जाऐंगे लेकिन सन्त इस बात को नहीं मानते। कबीर साहब कहते हैं:

जीवन मुक्त सो मुक्ता है।

सन्त कहते हैं, ''कौन जानता है कि वह मुक्त हुआ है? जीते जी मरकर अपनी आँखों से देखें।'' कबीर साहब का शब्द है गौर से सुनें:

साधो देखो जग बौराना, साधो देखो जग बौराना।।
साँचि कहौ तौ मारन धावै, झूठे जग पतियाना।।

कबीर साहब कहते हैं कि दुनियां की हालत देखें! जो सच कहते हैं दुनियां उन्हें मारने के लिए दौड़ती है जो झूठे वायदे करते हैं उनसे खुश होती है। सच मिर्च है, झूठ गुड़ है। परमात्मा अकाल-पुरख वाहेगुरु सच है। बाहरमुखी होकर दिन-रात दौड़ना झूठ है। पत्तों में ब्रह्मा, डाली में विष्णु और फूल में शंकर है; तीनों देवताओं को तोड़कर निर्जीव की पूजा कर रहे हैं। आप कहते हैं:

माथे तिलक हाथ माला बाना, लोगन राम खिलौना जाना।

हम लोग माथे पर तिलक लगाकर हाथ में माला पकड़कर भगवान को खिलौना समझते हैं कि परमात्मा बच्चा है खिलौने से बहल जाएगा। जिन्होंने मेहनत करके परमात्मा को पाया है उनसे पूछें।

जिन पाया तिन पूछो भाई, सुख सतगुरु सेव कमाई है।

गुरु नानकदेव जी कुल मालिक थे। उन पर पहले से ही बख्शिश थी उन्होंने हम भूले जीवों को समझाने के लिए ईंट-पत्थरों का बिस्तर किया। सन्त इस संसार में आकर सच का होका देते हैं कि परमात्मा जाग रहा है और आपके अंदर है, गुरु ने दया की; भाग्य जगाया। भाई गुरदास जी कहते हैं:

पहले पाई बख्श दर, पिच्छो दे गुरु घाल कमाई,
अक्क रेत आहार कर, रोड़ा दी गुरु की बिछाई,
भारी करी तपस्या, वड्डे भाग हर स्यों बन आई।

कबीर साहब का शिष्य धर्मदास चौदह करोड़ का धनी था, वह कबीर साहब को मिलने से पहले ठाकुरों की पूजा किया करता था। आप अनुराग सागर पढ़कर देखें! कबीर साहब ने उसे कई जन्मों में ढूंढा। आखिर एक बार कबीर साहब ने धर्मदास से पूछा, ''क्या ये ठाकुर कभी बोले भी हैं? यह कहकर कबीर साहब आलोप हो गए। धर्मदास के सोचा! अगर यह साधु रूकता तो मैं इससे कुछ पूछता?

एक बार धर्मदास लकड़ियाँ धोकर जला रहा था। कबीर साहब फिर प्रकट हुए और उन्होंने कहा, ''तुम बहुत पापी हो।'' यह नियम है कि पत्नी से पति की निन्दा बर्दाश्त नहीं होती। धर्मदास की पत्नी ने कबीर साहब से कहा, ''मेरा पति पापी नहीं, पापी तुम हो।'' यह सुनते ही कबीर साहब फिर आलोप हो गए। धर्मदास ने अपनी पत्नी से कहा अगर तू ऐसी बात न करती तो मैं जरूर इस साधु से कुछ पूछता? पत्नी ने कहा, ''आप यज्ञ करें, गुड़ पर मक्खियां ढ़ेर।''

धर्मदास ने मथुरा काशी और बहुत सी जगहों पर यज्ञ किए। यज्ञों में बहुत साधु आए लेकिन कबीर साहब कभी नहीं आए। जब सारा धन यज्ञों में खत्म हो गया तो धर्मदास के दिल में ख्याल आया जिसके लिए यज्ञ किए थे वह साधु नहीं मिला अब डूबकर मर जाना चाहिए। मन ने अंदर से ही वकील की तरह कहा अगर यहाँ डूबकर मरेंगे तो लोग कहेंगे कि बनिया पैसे का गम नहीं सह पाया?

जब आगे जाकर धर्मदास नदी में छलांग लगाने लगा तो कबीर साहब प्रकट हुए। धर्मदास ने कहा, ''महाराज जी! अगर आप मुझे पहले मिल जाते तो मैं आपको बहुत धन देता।'' कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैं तुमसे कुछ लेता तो तुम मुझे लालची महात्मा समझते। मैं तुझे वह अविनाशी वस्तु दूँगा जिसे चोर चुरा नहीं सकते आग जला नहीं सकती।'' कबीर साहब ने धर्मदास और उसकी पत्नी आमना को 'नामदान' दिया। बीबी आमना संसार की पहली औरत है जिसे 'नामदान' प्राप्त हुआ। आमना ने कबीर साहब के लंगर की बहुत सेवा की। बाद में कबीर साहब ने इन्हीं को उपदेश देने का हुक्म दिया।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे संसार में आकर सच का होका देते हैं तो दुनियादार उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते उनका विरोध करते हैं। महाराज सावन सिंह जी एक मिसाल दिया करते थे कि एक जाट ने बनिए से सौदा लिया बनिया उससे पैसे लेने भूल गया। रास्ते में जाट बनिये को भला-बुरा कहता जा रहा था कि पता नहीं इसने मुझे कितना ठग लिया है? हमारी भी यही हालत है हम सोचते हैं कि ये सन्त लोग दिन-रात प्रचार कर रहे हैं मालूम नहीं हमसे क्या लूटना चाहते हैं? कबीर साहब कहते हैं:

तरवर सरवर सन्त जन, चौथे बरसे मेह,
पर स्वार्थ के कारणें, चारों धारे देह।

पेड़ अपना फल नहीं खाते, बादल अपना पानी नहीं पीते। इसी तरह सन्त इस संसार में हमें 'नाम' की दौलत देने के लिए आते हैं।

हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।

शुरू में हिन्दु-मुसलमान दो ही समाज थी। हिन्दुओं नें रमी हुई चीज़ को राम कह दिया और मुसलमानों ने रहम करने वाली ताकत को रहमान कह दिया। हिन्दु कहते हैं, 'राम हमारा है।' मुसलमान कहते हैं, 'रहमान हमारा है।' मगर उसे पाने के लिए कोई साधन नहीं करता, दोनों ही एक-दूसरे के विरोधी हैं। परमात्मा एक है वह सबका दाता है; हम परमात्मा के नाम पर ही लड़ते हैं।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक पूर्व का रहने वाला और दूसरा उत्तर का रहने वाला था, दोनों ने हिस्सेदारी कर ली। जब फसल बीजने लगे तो लफ्ज़ो के झगड़े में उलझ गए। एक ने कहा, 'गंधम बीजेंगे।' दूसरे ने कहा, 'गेहूँ बीजेंगे।' दोनों भाषाओं को समझने वाले ने उन दोनों को अपना-अपना बीज लाने के लिए कहा। वे दोनों जब बीज ले आए तो उन दोनों को समझाया कि देखो! आप दोनों एक ही चीज़ बीजना चाहते हैं, झगड़ा सिर्फ भाषा का है।

हमारी समाजों के रस्मों-रिवाज़ अलग-अलग हैं क्योंकि ये हमने बनाए हैं मगर रूहानियत एक है। हम सभी परमात्मा को खोज रहे हैं उससे मिलना चाहते हैं लेकिन अपने-अपने कर्म-कांडों की वजह से आपस में झगड़ रहे हैं।

जब गुरु नानक देव जी मक्का गए तो उनसे पूछा कि परमात्मा की दरगाह में हिन्दुओं को अच्छा समझा जाएगा या मुसलमानों को? आपने कहा जिनके कर्म अच्छे नहीं होंगे वे रोएगें।

चंगे अमला बाद दोनों रोई।

जब मौहम्मद साहब से पूछा गया क्या आप मुसलमानों की हामीं भरेंगे? आपने कहा, ''मैं किसी की हामीं नहीं भरूंगा, आपके कर्म ही आपकी सिफारिश करेंगे।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु पीर हामां तां भरे, जे मुरदार ना खाए।

गुरु पीर तभी हामीं भरेंगे अगर मुर्दा न खाएं। हिन्दु-मुसलमान दोनों ही परमात्मा को पाने के लिए मेहनत नहीं करते।

आपस में दोउ लड़े मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना।।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी, प्रात करैं असनाना।।

कबीर साहब कहते हैं, ''ऐसे बहुत लोग देखे हैं जो सुबह उठकर नहाते हैं, सवा महीने तक जलधारा करते हैं। आमतौर पर हम दुनियां के जीव परमात्मा को पाने के लिए घर-बार छोड़ देते हैं जिस्म पर राख लगा लेते हैं कान फड़वा लेते हैं नीले-भगवे कपड़े पहन लेते हैं और धूनियां तपाने लग जाते हैं।''

मुझे अपनी जिंदगी में ऐसे बहुत से कर्म करने का मौका मिला है। जब मैं धूनियाँ तपाकर बाबा बिशनदास जी की शरण में गया उन्होंने समझाया, ''बेटा! अंदर तो पहले ही बहुत आग जल रही है काम की आग कितनी बुरी है सोऐ हुए को जगा देती है बेहाल कर देती है। क्रोध की आग ऐसी है कि भाई, भाई का कत्ल कर देता है।''

आतम छोड़ि पषानै पूजैं, तिन का थोथा ज्ञाना।।

आप प्यार से कहते हैं कि आत्मा के बारे में बहुत से ग्रंथ लिखे गए हैं। पढ़े-लिखे लोग आत्मा के बारे में बहुत कुछ बोलते अवश्य हैं लेकिन वे आत्मा का ज्ञान नहीं करवा सकते। आत्मा का ज्ञान वही करवा सकता है जिसे आत्म-ज्ञान हो चुका हो। गुरु नानक जी कहते हैं:

ज्ञान ध्यान धुन जानिए अकथ कहावे सोए,
हरि हरि करे नित कपट कमाए हृदय शुद्ध न होए,
ज्ञानी गुरु बिन भक्त न होए।

हरि-हरि करने से हमारा हृदय शुद्ध नहीं होता। राम-राम कहने से राम नहीं मिलता। वाहेगुरु-वाहेगुरु कहने से वाहेगुरु नहीं मिलता। मिश्री-मिश्री कहने से मुँह मीठा नहीं होता अगर मिश्री खाएंगे तभी मुँह मीठा होगा। हम जिस ताकत को पुकार रहे हैं हमनें उस ताकत से

मिलना है। बड़े-बड़े नेमी धर्मियों से बातचीत हुई उन्हें भी आत्मा का ज्ञान नहीं। पत्थरों को पूज-पजूकर दिल भी पत्थरों जैसे हो गए। अंदर बैठे ठाकुर-भगवान को कोई भी नहीं पूज रहा।

आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ बर्त भुलाना।।

कई लोग कई-कई दिन तक लगातार आसन लगाकर बैठ जाते हैं; इससे मन में अहंकार आ जाता है फिर ऐसे लोग गाँव-शहरों में ढ़िढोरा पिटवा देते हैं। हम लोग इसे ही भक्ति समझ लेते हैं। मैं किसी की निन्दा नहीं कर रहा। कहने का भाव ऐसे कर्म करने से मन आत्मा को शान्ति नहीं मिलती; **न अंदर प्रकाश न आवाज**।

महाराज सावन सिंह जी एक मिसाल दिया करते थे कि एक जैनी तेल का दीपक भरकर पाठ करने बैठ जाता था। दीपक में तेल खत्म हो जाने पर ही वह पाठ से उठता था। घर में नई बहु आई वह ये नहीं जानती थी कि दीपक का तेल खत्म होने पर ही पाठ से उठने का नियम है। वह बेचारी तेल खत्म होने से पहले ही दीपक में और तेल भर दिया करे। उस जैनी ने पाठ करते हुए बोलना नहीं था। आखिर भूख ने उसे व्याकुल कर दिया।

आप प्यार से समझाते हैं कि इस तरह के कर्म करने से और व्रत रखने से अहंकार आ जाता है। पत्थरों को पूजने से पत्थर और पेड़ों को पूजने से पेड़ बन जाएंगे। सीधी से बात हैः

जहाँ आसा तहाँ वासा।

माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना।।

कुछ पढ़कर कुछ कहानियां सुनाकर लोगों को अपने पीछे लगा लेते हैं लेकिन आत्मा और परमात्मा के बारे में कोई ज्ञान नहीं। आत्मा भी अंदर है और परमात्मा भी अंदर है।

घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं, माया के अभिमाना।
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े, अंतकाल पछिताना।।

घर-घर मंत्र देते फिरते हैं साथ में दो-चार शिष्य होते हैं जो लोगों से कहते है, ''आप कितने भाग्यशाली हैं कि बिना बुलाए ही गुरु आपके घर आए हैं।'' ऐसे गुरु और चेले दोनों ही डूबेंगे। गुरु साहब कहते हैं:

अंधा गुरु ते अंधा चेला, नर्का-नर्की धक्कम धकेला।

बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना।
करैं मुरीद कबर बतलावैं, उनहूँ खुदा न जाना।।

बहुत से औलिए पीर-फकीर लोगों को अपना शिष्य बना लेते हैं। उन बेचारों को तीर्थों और कब्रों की पूजा करने में लगा देते हैं।

हिन्दू की दया मेहर तुरकन की, दोनों घर से भागी।
वह करैं जिबह वे झटका मारैं, आग दोऊ घर लागी।।

सन्त कहते हैं इस धरती पर हमें जितना जीने का अधिकार है उतना ही पशु-पक्षियों को भी है। मौत का फैसला परमात्मा करता है अगर हम किसी की मौत का फैसला अपने हाथ में ले लें तो उसे हिंसा कहा जाएगा। किसी भी सन्त ने हिंसक होने की इज़ाज़त नहीं दी। गुरु साहब कहते हैं:

लिए दिए बिन रहे न कोय।

आप जिसका गला काटेंगे वह आपका गला काटेगा। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''गाय बकरी और अपने पैदा किए हुए सभी में एक जैसा खून है।'' कबीर साहब कहते हैं:

माँस माँस सब एक है, मुर्गी हिरनी गाय,
आँख देख नर खात है, बाँधे यमपुर जाए।

सभी सन्त हमें बड़े प्यार से समझाते हैं कि इस पाप से बचें। आज

हम किसी के माँस में मसाला लगाकर खाएंगे तो कल वह हमारे माँस को खाएगा। कोई भी वेद-शास्त्र ऐसा करने की इजाजत नहीं देता। भाई गुरदास अपनी बाणी में लिखते हैं कि शेर जब बकरी को खाने लगा तो बकरी हँस पड़ी। शेर ने पूछा, '' तू हँस क्यों रही है?'' बकरी ने कहा, ''मैं इसलिए हँस रही हूँ कि हम लोग पत-पराल घास-फूस खाकर गुजारा करते हैं। जब हमारी यह हालत हो रही है तो हमें खाने वालों का क्या हाल होगा?''

मुसलमान धीरे-धीरे काटने को हलाल कहते हैं और हिन्दु एक ही बार में काटने को झटका कहते हैं। प्यारेयो! हलाल वह है जो आप दस नाखूनों की मेहनत से कमाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

दिन को रोजा रखत है, रात हनत है गाय,
वो खून वो बंदगी, क्यों खुश होय खुदाय।

हम दिन में व्रत-रोजे रखते हैं। खुदा हमारी बंदगी पर खुश होगा या हम जो कत्ल करते हैं उस पर खुश होगा? जिनका परमात्मा के साथ प्यार है उन्हें परमात्मा की खलकत के साथ भी प्यार है।

हे परमात्मा! तूने ही सबको बनाया है, तू ही सबमें बैठा है। किसे बुरा कहें? सन्त हिन्दु, मुसलमान या किसी समाज की निन्दा नहीं करते; पापी की निन्दा करनी भी बुरी है।

निन्दया भली काहू की नाहिं, मनमुख मुग्ध करन,
मुँह काले तिन निन्दा, नरके घोर पवन।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसकी निन्दा करेंगे उसके ऐब-पाप आपके खाते में जमा हो जाएंगे।'' महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर आप गंदगी में पत्थर फैंकेगें तो उस गंदगी के छींटे आप पर ही पड़ेंगे।'' सन्त किसी की निन्दा नहीं करते। हमें भी यही समझाते हैं कि परमात्मा आपके अंदर है उसके मिलने का साधन भी आपके अंदर है। हम अपने आप परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते

अगर कोई परमात्मा के साथ जोड़ने वाला मिले तो ही समझ आती है।

या बिधि हँसत चलत हैं हमको, आप कहावैं स्याना।
कहैं कबीर सुनों भाई साधे, इनमें कौन दिवाना।।

कबीर साहब कहते हैं, ''दुनियां के लोग अपने आपको स्याना और हमें पागल कहते हैं लेकिन परमात्मा तो मेरे पागलपन को जानता है। आप खुद ही सोचकर देखें! कौन स्याना और कौन पागल है?''

कबीर साहब ने बड़े प्यार से समझाया कि परमात्मा एक है। उसे राम, रहीम, वाहेगुरु कुछ भी कह लें। यह वर्णात्मक शब्द हैं। नाम धुनात्मक है, यह किसी भी भाषा में नहीं बोला जाता। जिसका नाम लेते हैं उससे मिलना है। हमें भी चाहिए अपने जीवन को पवित्र बनाएं, भजन-सिमरन करें।

♣♣♣

प्रार्थना

एक प्रेमी *: जब एक शिष्य प्रार्थना करता है तो क्या वह प्रार्थना भी भजन-अभ्यास की तरह उसके खाते में जाती है?*

बाबा जी : हाँ, **प्रार्थना** करना अच्छा होता है अगर प्रार्थना दुनियावी चीज़ों के बारे में नहीं सन्तमत के बारे में है तो हमारी प्रार्थना सुनी जाती हैं और उसका उत्तर भी दिया जाता है। जब हम नौं द्वारे खाली करके आँखों के बीच आ जाते हैं गुरु को प्रकट कर लेते हैं उसके बाद ही हम सच्ची **प्रार्थना** कर सकते हैं।

जब हम दोनों आँखों के बीच पहुँचकर गुरु को प्रकट कर लेते हैं तो जो भी हमारे हृदय के अंदर से आता है वह गुरु के आगे **प्रार्थना** होती है फिर हमें दुनियावी चीज़ों की कोई इच्छा नहीं रहती। जब हम अंदर जाकर गुरु के स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं तब हमें समझ आ जाता है अगर हम गुरु से गुरु के सिवाय कुछ और माँग रहे हैं तो हम सिर्फ दुख-दर्द ही माँग रहे हैं। सच्ची प्रार्थना अंदर जाकर गुरु को प्रकट करने पर ही होती है।

एक औरत ने महाराज सावन सिंह जी से एक बच्चे के लिए **प्रार्थना** की, उसे एक बच्चा हुआ। मैं खुश हूँ कि पश्चिमी प्रमियों के लिए बेटा-बेटी बराबर है। अब हिन्दुस्तान में पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से चीज़ें बदल रही हैं लेकिन उन दिनों में लड़का होना बहुत बड़ी बात होती थी। जब उस औरत को बेटी पैदा हुई तो उसने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''अब मेरा तुम पर भरोसा नहीं रहा क्योंकि मैंने तुमसे बेटा माँगा था लेकिन तुमने मुझे बेटी दी है।'' सोचकर देखें! हम गुरु के आगे किस तरह की **प्रार्थना** करते हैं? अगर गुरु हमें बच्चा दे देता है फिर हम बेटा या बेटी को लेकर व्याकुल हो जाते हैं।

पश्चिम की एक औरत कई बार 77 आर.बी. आश्रम आई। उसने मुझे बताया कि उसका परिवार, सास और उसके रिश्तेदार उसका सम्मान नहीं करते क्योंकि उसकी कोई औलाद नहीं है इसलिए उसने बच्चे के लिए प्रार्थना की। मैंने उस औरत से कहा, ''यह परमात्मा सावन-कृपाल का दरबार है जो भी उनसे **प्रार्थना** करता है वे जरूर उनकी प्रार्थना का उत्तर देते हैं।'' इसके बाद उसे एक बच्चा हुआ। मैं जब अमेरिका गया मैंने उसे सतसंग में देखा कि उसके पास एक बच्चा था लेकिन उसके बाद कई साल हो गए फिर मैंने उसे कभी सतसंग में नहीं देखा। आमतौर पर वस्तु पाने के बाद हम गुरु को भी छोड़ देते हैं।

मैंने आपको पहले भी कई बार बताया है कि एक बार हम बहुत लम्बी दूरी तय करके अमेरिका में एक बहुत अमीर परिवार के पास गए। दोनों पति-पत्नी मेरे गले लगकर रोकर कहने लगे, ''आपने हमें बहुत धन-पदार्थ दिया है लेकिन हमारी कोई औलाद नहीं है। आप हमें इतना पैसा न देते या हमें फिर एक औलाद भी देते।'' मैंने कहा, ''यह परमात्मा कृपाल का दरबार है वे आपकी **प्रार्थना** का उत्तर देंगे।'' एक साल बाद जब मैं उनके घर गया तो उनके पास एक बच्चा था। उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि आपने हमें बच्चा दिया है लेकिन यह बच्चा रात में बहुत रोता है अब आप इसे चुप कराएं।

जब हम गुरु के आगे **प्रार्थना** करते हैं तो वह हमारी प्रार्थना सुनता है। हम जो माँगते हैं वह हमें सब देता है लेकिन फिर हम उससे और ज्यादा चीजें माँगने लग जाते हैं। पहले हम गुरु से बच्चा माँगते हैं फिर उससे कहते हैं कि वह हमारे बच्चे को चुप कराए।

अगर मैं आपको दुनियावी लोगों की प्रार्थनाओं के बारे में बताने लगूं तो कई किताबें भर जाएंगी। मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता था लेकिन मजबूर होकर इस प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ।

मैं आपको एक औरत के बारे में बताता हूँ जो कई बार 16 पी.एस. आई। कई सालों बाद उसने मुझसे पूछा, ''क्या आप नहीं

जानते कि मैं यहाँ क्यों आती हूँ?'' मैंने कहा, ''हाँ! मैं जानता हूँ कि तुम यहाँ किसलिए आती हो? '' उसने कहा, ''अगर आप जानते हैं तो मुझे वह क्यों नहीं दे देते?'' मैंने उससे कहा, ''अगर तुम्हें वह मिल जाए जो तुम माँग रही हो तो क्या तुम संतुष्ट हो जाओगी?'' उसने कहा, ''अगर आप मुझे वह दे दें तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगी।'' उसकी कोई औलाद नहीं थी उसने बच्चे के लिए **प्रार्थना** की थी।

परम पिता परमात्मा कृपाल की दया से उसके शरीर में एक नई आत्मा ने प्रवेश किया उसके बाद वह मुझसे मिलने आई और उसने कहा कि उसे बच्चा होने वाला है लेकिन उसने मुझे धमकी दी अगर आप मुझे बेटा नहीं देगें तो मेरा आपमें विश्वास नहीं रहेगा। परम पिता कृपाल की दया से उसे एक बेटा हुआ लेकिन बदकिस्मती से जब वह बच्चा बहुत छोटा था एक दिन बच्चे के शरीर पर गर्म पानी गिर गया और वह बहुत बीमार हो गया तो वह मेरे पास आई और उसने कहा, ''अगर मेरा बेटा नहीं बचा तो मेरा आपमें विश्वास नहीं रहेगा।'' वह बच्चा ठीक हो गया लेकिन वह औरत पागल हो गई फिर वह मेरे पास आई और उसने कहा, ''मैंने आपमें विश्वास खो दिया है पहले आप मुझे अच्छा करें फिर मैं आप पर विश्वास करूंगी।''

ये दुनियावी लोगों की **प्रार्थनाओं** की कहानियाँ हैं। हम प्रार्थनाएं करते जाते हैं हमें चीज़ें मिलती जाती हैं। हमारी सभी प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं फिर हम और ज्यादा माँगते हैं हमें कभी संतुष्टि नहीं मिलती।

यह सब कहने का यही मतलब है कि सच्ची प्रार्थना तभी हो सकती है जब आप अपने शरीर के नौं द्वारो को खोलकर ऊपर उठें। जब आप अंदर गुरु से मिलें उससे **प्रार्थना** करें, केवल तभी हृदय की गहराई से प्रार्थना आएगी। तब आप गुरु से ऐसा कुछ नहीं माँगेगें जिससे आपको दुख या पीड़ा हो। नाम और गुरु की **प्रार्थना** के अलावा दूसरी चीज़ों के लिए प्रार्थना करने से आपको खुशी या संतुष्टि नहीं हो सकती। संतुष्टि केवल नाम की प्रार्थना करने पर ही मिलती है।

हमें पता नहीं कि हमें किस तरह की प्रार्थनाएं करनी चाहिए, किस तरह की चीज़ें गुरु से माँगनी चाहिए। हमें अंदर जाने पर ही पता लगता है कि हमें गुरु से क्या माँगना चाहिए, क्या **प्रार्थना** करनी चाहिए? अंदर गुरु के स्वरूप को प्रकट करने के बाद ही हम समझ सकते हैं कि हमारा गुरु क्या है? वह हमें क्या देने में सक्षम है?

प्यारेयो! जब हम अंदर जाते हैं उस पावर को वहाँ देखते हैं तभी हम सच्ची **प्रार्थना** करते हैं। मैंने सतसंग में हमेशा प्रार्थनाओं के बारे में कहा है जैसे एक बच्चा स्कूल जाता है अगर वह स्कूल जाने की बजाय रास्ते में ही बैठ जाए और अपने अध्यापक से प्रार्थना करे उसके इम्तिहान में अच्छे नंबर आएं तो **प्रार्थना** करने से वह इम्तिहान में पास नहीं होगा। बच्चा स्कूल जाए और मेहनत करे तभी उसे अच्छा परिणाम मिलेगा वह इम्तिहान में पास होगा।

प्यारेयो! मैं जब आर्मी में था, वायरलेस ऑपरेटर बनने के लिए पूना परीक्षा देने गया। वहाँ के अध्यापक बहुत सख्त थे उन्होंने कहा, ''हम भगवान में विश्वास नहीं करते, हम केवल मेहनत में विश्वास करते हैं। जो मेहनत करके आए हैं खुद को इम्तिहान के लिए तैयार करके आए हैं वे पास हो जाएगें बाकियों को हम फेल करके यहाँ से वापिस भेज देंगे।''

प्यारेयो! मैंने हमेशा महाराज सावन सिंह जी के मुखारविन्द से यह कहते हुए सुना है, ''मैं एक किसान गुरु हूँ। किसानों को बहुत रूखा और सख्त होना पड़ता है। मैं आप सबका एक बहुत ही सख्त इम्तिहान लूंगा; मैं आपसे बहुत मेहनत का काम करवाऊंगा।''

मैंने महाराज कृपाल को हमेशा यह कहते सुना, ''मैं एक मुनीम हूँ। मैं आपसे एक-एक पैसे का हिसाब माँगूगा?'' आपके कहने का भाव कि मैं आपसे हर साँस का हिसाब मागूँगा। क्या आपने हर साँस के साथ सिमरन किया या आपने उन साँसो को सुखों और बेमतलब की चीज़ों में खराब कर दिया?

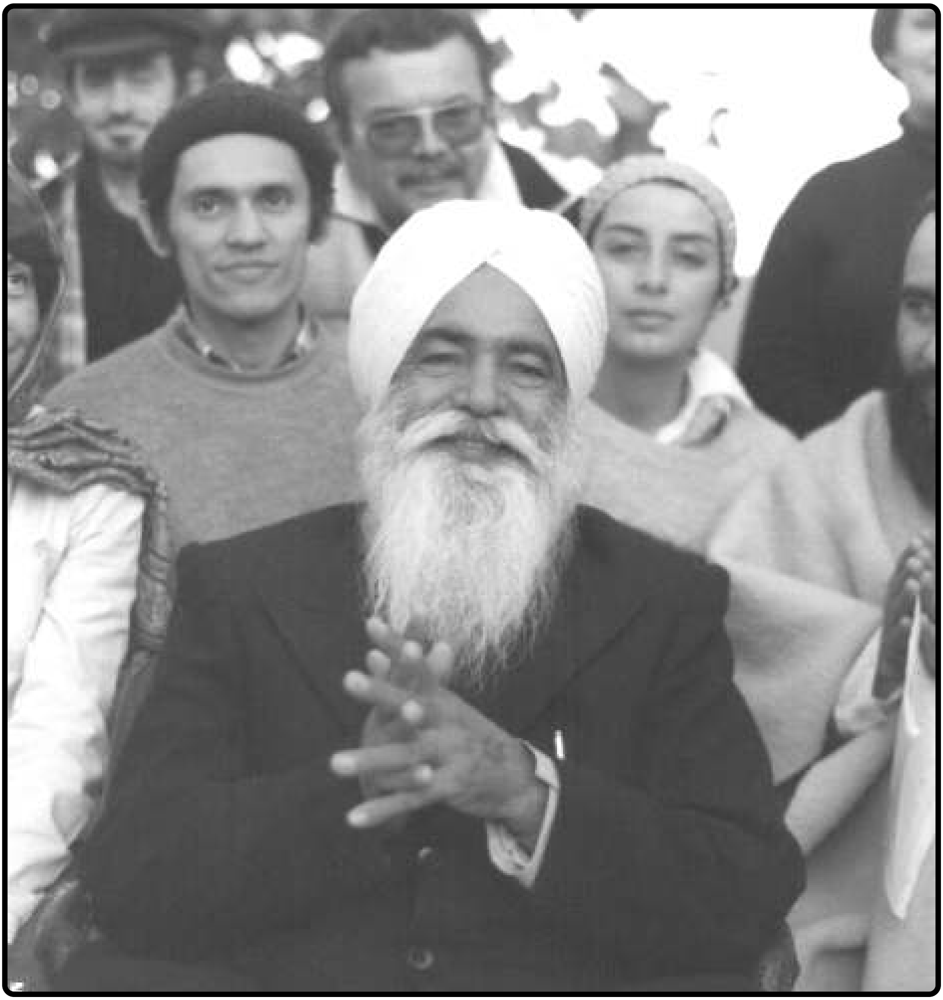

प्यारेयो! हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें हमारा प्यारा गुरु मिला जिसने हमें **प्रार्थना** करना सिखाया। उसने हमें वह सब दिया जो हमारे पास है अगर आप हीरों की दुकान पर जाकर कोयला माँगे तो कोयला कैसे मिलेगा? इसी तरह प्यारे गुरु की दुकान पर केवल 'नाम' है। आप गुरु से नाम के लिए **प्रार्थना** करेंगे तो आपको 'नाम' मिलेगा अगर आप दूसरी चीज़ें मांगेगे जो गुरु के पास नहीं हैं तो वह आपको कैसे मिलेंगी?

✡✡✡

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

मन की लहरें

सॉंपला

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम गरीब आत्माओं पर दया की और हमें अपनी भक्ति का सुनहरा मौका भी दिया है।

मैं हर ग्रुप में चाहे हिन्दुस्तानी प्रेमी हैं या पश्चिमी प्रेमी हैं उन्हें दो जरूरी बातें याद रखने के लिए कहता हूँ जिससे उन्हें भटकते मन को रोकने में मदद मिलेगी अगर हम उन बातों को याद रखते हैं तो हम भजन-अभ्यास में आसानी से तरक्की कर पाएंगे।

आप जानते हैं कि **मन की लहरें** सागर की लहरों से भी ज्यादा होती हैं। एक लहर के पीछे दूसरी लहर उठती है। हमारे मन में दिन-रात उठने वाले विचार इच्छाएं मन की लहरों के सिवाय कुछ नहीं हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि हमें अपने मन की इच्छाओं को दबाना नहीं चाहिए। सच तो यह है अगर हम मन की बात मानते जाएंगे और मन की इच्छाओं को पूरा करते जाएंगे तो ये इच्छाएं कभी खत्म नहीं होंगी। मन एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा पैदा करता जाएगा। भटकता मन स्थिर नहीं है यह आपको बर्बादी की तरफ ले जा सकता है।

शुरू में हमें बाहर से **मन की लहरों** को रोकने की कोशिश करनी पड़ती है लेकिन जब हम भजन-अभ्यास करते हैं हमारी सोच बदल जाती है हमें अंदर से शक्ति मिलती है तो हमें **मन की लहरों** को रोकने में मुश्किल नहीं होती। जब हम अपने सतगुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तब मन की इच्छाओं की तरफ जाना मुश्किल हो जाता है।

आपको इन आठ दिनों में बहुत अच्छा मौका मिला है कि आप अपने सिमरन को पक्का कर सकें। जैसे कि औरतें घर में अपने बच्चों

को पालती हैं। चौबिस घंटे बच्चे औरत की गोद में नहीं होते वह घर के और काम करते हुए गृहस्थी संभालती है बच्चे को भी उठाती है क्योंकि उसे बच्चे के साथ प्यार है। इसी तरह हम इस दुनियां में रहते हुए दुनियावी काम करते हुए अपने गुरु से प्यार कर सकते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''शिष्य इस दुनियां में रहते हुए दुनियावी काम करता है लेकिन दिल से वह सदा अपने प्यारे गुरु के साथ जुड़ा रहता है।''

पहली बात यह है कि इस संसार में दुनियावी काम करते हुए हमारी जुबान पर गुरु का सिमरन होना चाहिए और हमारी आँखों में गुरु का सुंदर स्वरूप होना चाहिए तभी हमारे दिल में विछोड़े की पीड़ा की आग जल सकती है।

दूसरी बात मैं सदा ही आप लोगों को याद दिलाया करता हूँ कि चाहे भजन-अभ्यास यहाँ करें चाहे अपने घर में करें लेकिन अभ्यास में बैठने से पहले यह पक्का कर लें कि आपको पाँच पवित्र नाम याद हैं ताकि जब आप अभ्यास में बैठें तो आपको इन नामों को याद करने के लिए प्रयत्न न करना पड़े।

भजन-अभ्यास को कभी बोझ न समझें। भजन-अभ्यास प्रेम-प्यार से करें। अब आप अपनी आँखें बंद करके सिमरन शुरु करें।

अगर चौदह लोक का राज्य मिले तो खुशी नहीं होनी चाहिए क्योंकि वह झूठ है, जाने वाला है। झूठी चीज़ से प्रीत करोगे तो धोखा खाओगे अगर वह राज्य वापिस छीन लिया जाए तो नाराज़ नहीं होना चाहिए क्योंकि जिसने दिया था उसी ने ले लिया वह राज्य उसी का था और झूठा था। **बाबा जयमल सिंह जी**

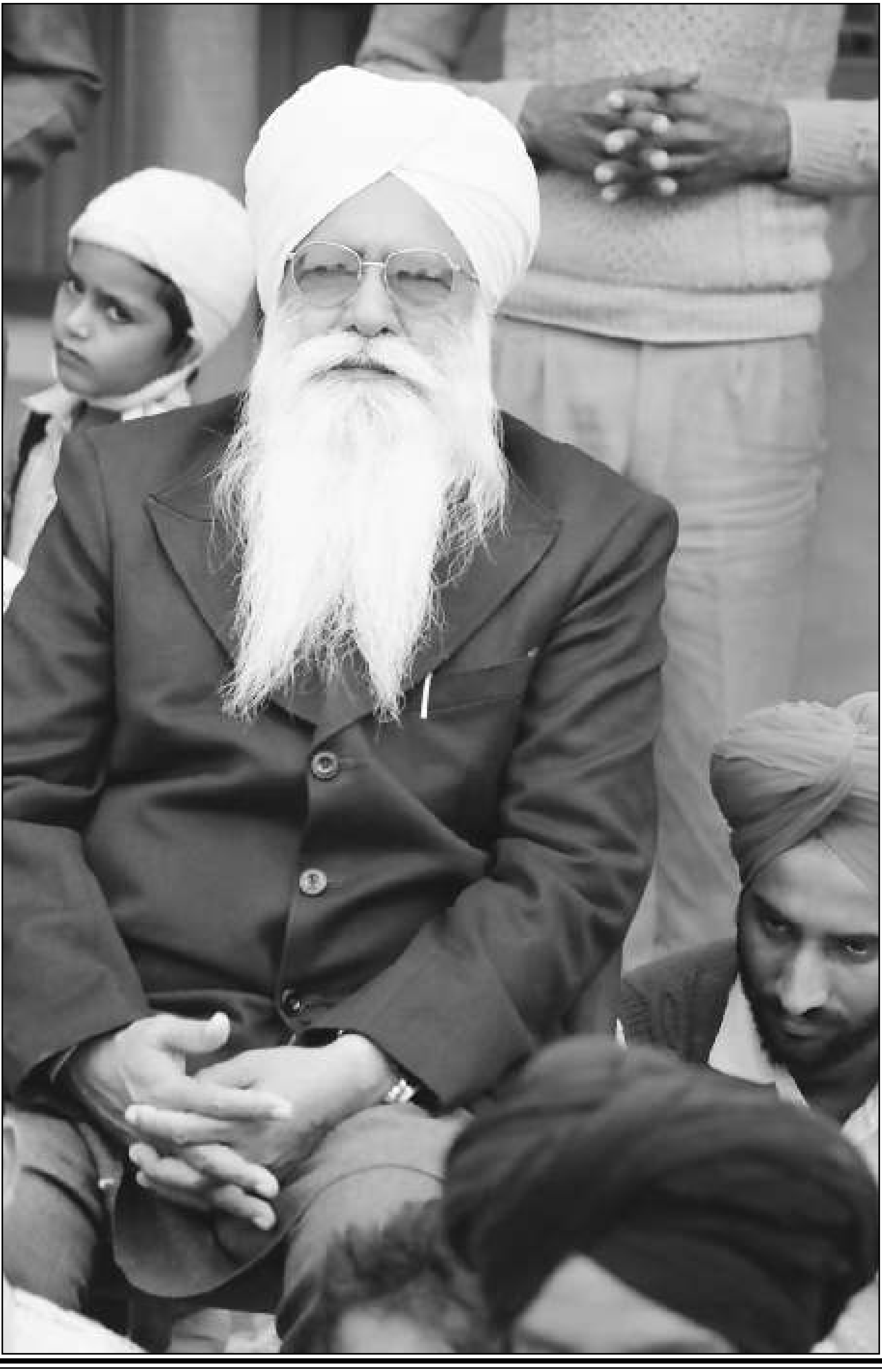

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

जिनके अंदर मालिक के **प्रेम** की शराब ठाठें मारती है उन्हें सब दर और दीवार मस्त नजर आते हैं। शम्स तबरेज साहब मालिक के प्रेम के नशे के विधान का जबरदस्त उपदेश देते हैं, ''अगर तू मस्त है तो और ज्यादा मस्ती पैदा कर, उसी मस्ती में लोटपोट हो जा। अपने आपको पहचान कि इस मस्ती को छोड़कर क्या होगा? बाहर की आँखों वाले अगर तू हमारी खोज से नावाकिफ है तो हमारी शराब की असलियत को समझ! इस हकीकत की शराब ने हमें भी अपनी पहचान दी है। जो ईश्क में घायल हो गए उन्हें मौत भी निढ़ाल नहीं कर सकती क्योंकि जिसकी ढ़ाल उस गुरु प्रीतम के चेहरे का ध्यान बन गई है उसे जमाने के तीर किस तरह घायल कर सकते हैं?''

प्रेमी के जज्बे

प्रेम जाहरी सूरत अख्तियार कर लेता है। प्रेमी की यही ख्वाहिश रहती है कि वह प्रीतम का दीदार करता रहे और उसके कलाम को गौर से सुनता रहे। प्रेमी के सिर से लेकर पैर तक सारे अंग अपने प्रीतम के मुस्ताक होते हैं। प्रेमी प्रीतम के चाँद के समान मुख को देखना लोचता है। वह प्रीतम के लाल होठों से अमृत वचन सुनने की लालसा रखता है।

प्रेमी चाहता है कि वे हाथ टूट जाएं जिन्होंने अपने यार के गले में बाँहें नहीं डाली। वे आँखें अंधी ही बेहतर हैं जिन्हें प्रीतम के दीदार की लज्जत नसीब नहीं हुई। प्रेमी चाहता है कि प्रीतम को अपनी आँखों के अंदर बसाकर आँखे बंद कर ले फिर वह न किसी को देखे और न ही किसी और को अपना प्रीतम देखने दे। कबीर साहब फरमाते हैं:

नैनों अंतर आप तू नैन झाँक मैं लूं, न मैं देखूं और को न तोहे देखन दूं।

प्रेम के अंदर और कोई हिरश-हवस बाकी नहीं रहती जिस तरह जलती आग में कोई कूड़ा-करकट नहीं रहता। मालिक से सारी दुनियां अपनी दिली मुरादें माँगती है लेकिन प्रेमी जिसमें प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित हो चुकी है वह मालिक से केवल मालिक को ही माँगता है। गुरु रामदास जी फरमाते हैं:

वसुधा सप्त द्वीप है सागर कड कंचन काड धरीजे,
मेरे ठाकुर के जन इन्हूं न वांछे हरि मांगे हरि रस दीजे।

अगर सात द्वीप और समुद्र की दौलत निकालकर ढेर लगाकर प्रेमी से पूछा जाए कि तुझे यह दौलत चाहिए या प्रीतम? प्रेमी उन चीजों की तरफ नज़र भी नहीं करेगा; वह तो हरि से हरि रस ही माँगेगा।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''प्रीतम की गली के भिखारी सच्चखंड से भी बेपरवाह रहते हैं, ऐसे प्रेमी दोनों जहानों से आजाद रहते हैं। जब प्रेमी प्रीतम की याद में गर्क हो जाता है तो उसे दुनियां की कोई चीज याद नहीं रहती। प्रेमी अंदर ही अंदर प्रीतम के जमाल को पाता रहता है और दिल ही दिल में उसके कमाल को समझता रहता है। उसे सारे जहान में प्रीतम के सिवाय कुछ नजर नहीं आता।''

प्रेम किस प्रकार करना चाहिए?

प्रेम रूह का खास गुण है यह बयान में आ सकने वाली बात नही। सन्तों-महात्माओं ने कई उदाहरण देकर यह यत्न किया है कि इसकी कुछ समझ आ सके। प्रेम जीवन-रस है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

रे मन ऐसी हरि स्यों प्रीत कर जैसी जल कमलेह,
लहरी नाल पछाड़िए भी बिखसे असनेह।

जिस तरह कमल का जीवन जल है उसकी पैदाईश ही जल है; ज्यों-ज्यों पानी की लहरें उसे पछाड़ती हैं वह बिखरता है इसी तरह **प्रेम** आत्मा का जीवन रस है उसकी पैदाईश मालिक प्रेम से है। ज्यों-ज्यों उसमें प्रेम बसता है वह प्रफुल्लित होती और महकती है।

हरि हमारा जीवन रस है उसके साथ **प्रेम** करें। ज्यों-ज्यों प्रेम बढ़ाऐंगे आत्मा उसमें लोटपोट होगी और कमल की तरह खिल उठेगी। मालिक के साथ कमल और पानी के तरह प्रीत होनी चाहिए।

रे मन ऐसी हरि स्यों प्रीत कर जैसी मछली नीर,
ज्यों अधको सो सुख घड़ों मन तन शान्त शरीर,
बिन जल घड़ी न जीवई प्रभ जाणें अब पीर।

मछली के जीवन का आधार पानी है, ज्यों-ज्यों पानी की लहरें उछाले मारती हैं मछली को बहुत सुख महसूस होता है; उसके शरीर में शान्ति आती है और मन में उल्लास पैदा होता है। पानी के बिना मछली को इतनी पीड़ा होती है कि वह एक पल भी जी नहीं सकती।

रे मन ऐसी हरि स्यों प्रीत कर जैसी चकवी सूर,
खिन्न पल नींद न सोवी जाणे दूर हजूर।

जिस तरह चकवी सूरज को लोचती है रात को नींद भरकर नहीं सोती इसी इंतजार में रहती है कि कब दिन निकले और उसका चकवे से मिलाप हो।

रे ऐसी हरि स्यों प्रीत कर जैसी चात्रिक मेह,
सर पर थल हरि आवले एक बूंद न पवही केह।

जिस तरह चात्रिक बारिश के पानी का प्यासा होता है वह तलाबों के पानी को ग्रहण नहीं करता।

रे मन ऐसी हरि स्यों प्रीत कर जैसी जल दुध होए,
आवटण आपे खपे दुध को खपण न दे।

जिस तरह जल की दूध के साथ प्रीत है वह पहले खुद जलता है लेकिन दूध को आँच नहीं आने देता इसी तरह आप हरि के साथ **प्रेम** करें। गुरु रामदास जी फरमाते हैं:

प्रीतम प्रीत लगी प्रभ केरी, जिव सूरज कमल निहारे,
मेर समेर मोर बहो नाचे, जब उनवे घनहारे।

प्रेमी की प्रीतम के साथ ऐसी प्रीत लगती है जिस तरह कमल की सूरज के साथ प्रीत लगती है। जिस तरह मोर पहाड़ों पर खुशी महसूस करते हैं, जब घनघोर बादल गरजते हैं तो मोर खुशी से नाचते हैं। जिस तरह कूंज आसमानों पर उड़ती है लेकिन उसका ध्यान अपने बच्चों की तरफ रहता है इसी तरह आप मालिक को नित्य अपने हृदय में रखें। गुरु अर्जुनदेव साहब उपदेश करते हैंः

जैसी गगन उठरेन्ती उड़ती कपरे बागे वाली,
ओह राखे चीत पीछे विच वचरे नित हृदय सार समाली।

जिस तरह कमल की महक का मस्त भँवरा अपने आपको कमल में कैद करके उसी में घुटकर मर जाता है। जिस तरह हिरन साज की आवाज पर मोहित होकर सिर रख देता है। जिस तरह बछड़े को गाय से मिलने की प्रीत होती है, स्त्री को पति के घर आने की प्रीत होती है और भूखे को अन्न की चाह होती है उसी तरह आप भी शौक से मालिक के साथ प्रीत करें।

महात्माओं ने मालिक के प्यार के अनेकों नमूने हमारे आगे रखे हैं जो विचारने योग्य हैं। सन्त **प्रेम** के समुद्र होते हैं जो हमें संसारी यात्रा में रोशनी के मनारे का काम देते हैं।

गुरु नानक साहब, गुरु अंगद साहब, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन साहब, कबीर साहब, तुलसी साहब, स्वामी शिवदयाल सिंह जी, रामकृष्ण परमहंस, शम्स तबरेज, मौलाना रूम, हाफिज साहब और अन्य महात्माओं के जीवन वृतांतो को पढ़े। उनके जीवन प्रेम से भरे हुए थे जिन्हें पढ़कर हमारे अंदर परमार्थ का शौक पैदा होता है। आप मालिक के प्रेम रूपी किसी प्रत्यक्ष महात्मा से ताल्लुक पैदा करें ताकि इस आलौकिक **प्रेम** रस को प्राप्त कर सकें।

प्रेम का मुकाम कहाँ है?

प्रेम तीनों गुणों से ऊपर होता है। देह प्राण और अंतिश कर्म प्रकृति के तीनों गुणों से सम्बंध रखते हैं। प्रेम उनसे ऊपर अपने आपमें

ही आत्मरस है। दिव्य **प्रेम** माया से रहित होता है। प्रेम का मुकाम सबके अंदर है लेकिन हर कोई इसे प्राप्त नहीं कर सकता, प्रेम महसूस तो होता है लेकिन पकड़ में नहीं आता। दुनियां इसकी तलाश में भटक रही है। हम प्रेम के ख्याल को अपने अंदर ही ले सकते हैं।

महात्मा मगरवी साहब फरमाते हैं जिसकी तलाश में इंसान उम्र भर इधर-उधर दौड़ता फिरता है जब हम अपने अंदर गए तो हमने उसे प्राप्त कर लिया। जिसे हम युगों-युगों ढूंढते रहे आखिर उसे अपने दिल की गली में ही प्राप्त कर लिया। इसलिए तू खोए हुए युसूफ को बाहर न ढूंढ, दिल के कुएं के अंदर तुझे उसका पता मिलेगा।

इस **प्रेम** का मुकाम हमारी आत्मा में है जोकि प्रेम रूपी मालिक की अंश है और जातिय तौर पर इसमें मौजूद है। यह अलग-अलग हालतों में प्रकट होता नजर आता है। जब हम मौहब्बत से किसी चीज को देखते हैं तो वह चीज़ चमकीली और खूबसूरत हो जाती है; प्रेम असल में खूबसूरती का अहसास ही है।

प्रेम पटोला तेंह शह दित्ता ढक्कन कूपत मेरी,
दाना बीना साईं मेन्डा नानक सार न जाणा तेरी।

प्रेम हमारी आत्मा में हर समय मौजूद है, हमारी जिंदगी ही प्रेम है। हम प्रेम से ही आए और प्रेम में ही हमारा निवास है। हमनें प्रेम से ही मिलना है और प्रेम ही हमारे पर्दे ढ़कने वाला कपड़ा है।

साच हृदय सच प्रेम निवास, प्रणवात नानक हम ताके दास,
मेरा मन तन प्रेम नाम आधार, नाम जपी नानक सुख सार।

प्रेम सच है इसका निवास हमारे हृदय के अंदर है। प्रेम ही नाम है यह तन-मन में समा रहा है, जो इसे खोजते हैं वे इसे प्राप्त करते हैं।

कर सेवे पूरा सतगुरु भुख जाए लेह मेरी।

गुरु सिक्खा मन हरि प्रीत है बिन पूजन आवे,
हरि नाम वणंजे रंग स्यों लाहा हरि नाम ले जावे।

जब गुरु शिष्यों के मन में हरि की प्रीत प्रकट होती है तब उनकी सब इच्छाएं खत्म हो जाती हैं वे गुरु को पूजने जाते हैं और हरि के नाम के व्यापार में रंग जाते हैं।

जिन्हां गुरुमुख अंदर न्हों ते प्रीतम सच्चा लाया,
राति आते डेहो नानक प्रेम समाया।

गुरुमुख सच्ची आशिकी जित प्रीतम सच्चा पाईए,
अनदिन रहे आनन्द नानक सहज समाईए।

गुरुमुखों की आशिकी सच्ची होती है वे सच्चे प्रीतम को पा लेते हैं। वे दिन-रात आनन्द में रहते हैं और साहब में समा जाते हैं। गुरुमुखों में यह **प्रेम** सच्चा प्रीतम अपने आप लगाता है, वे दिन-रात सच्चे प्रेम में समाए रहते हैं।

प्रेम की तालीम प्राचीन ग्रन्थों में

सब मजहबों में **प्रेम** की तालीम अपने-अपने ढ़ग से मिलती है। मुसलमान फकीरों की किताबों में इसका बहुत जिक्र मिलता है। हजरत मसीह की तालीम में प्रेम का विशेष जिक्र आया है। वेदों, उपनिषदों में भक्ति मार्ग की तालीम मिलती है। भक्ति या प्रेम का मार्ग मालिक की दया से ही मिलता है। उपनिषदों में मालिक की दया और अपने आपको मालिक के हवाले करने पर जोर दिया गया है।

प्रेम की तालीम गुरु ग्रंथ साहब, तुलसी साहब, स्वामी शिवदयाल सिंह जी, दादू साहब, पलटू साहब आदि की बानियों में कुछ निराले ढ़ग से आई है। प्रेम हमारा पैदाईशी हक है; मालिक प्रेम का समुद्र है। आत्मा उसकी जाति की अंश है। प्रेम हमारी जाति है वह बादशाह है और हम उसके बच्चे हैं। हमें अपनी प्रेम की बादशाहत को संभालना चाहिए। हम कब तक जिस्मानी कैद में टिके रहेंगे?

बाहर की ऐशों-ईशरतों में फँसना हमारे लिए शर्म का कारण है। हमें ईश्क के बिना और किसी चीज़ को कबूल नहीं करना चाहिए। प्रेम की खबर किसी पूरे कामिल गुरु से मिलती है। ईश्क का यह पेड़ आम

दुनियां की नज़र से दूर है यह रब के खास बंदो को ही दिखाई देता है। प्रेम के भेदों को बयान करना हर एक का काम नहीं। तू उस आदमी के पास बैठ जो प्रेम की खूबियों को देखता और बुलबुल की तरह उसके राग गाता है। यह किसी हिदायत का मोहताज नहीं इसकी बख्शिश मालिक की खास रहमत के कारण होती है।

प्रेम तो दिल देने का नाम है। किसी ऐसे से पूछ जिसे इसका तर्जुबा हो! प्रेम लिखने-पढ़ने में नहीं आ सकता। प्रेम की दास्तान लिखना मुश्किल है जिस तरह समुद्र की लहरों को बाँधना असंभव है। वह जुबान नहीं जो ईश्क के भेद को खोलकर बता सके। प्रेम का बयान लिखने बोलने या किताबों के पन्नों में नहीं आ सकता।

आम लोग इस बारे में जो कहते हैं वह आशिकों का रास्ता नहीं। ईश्क की जड़ें अजल-अनाद में हैं इसके सब्ज पत्ते अबद अनन्त में फैले हुए हैं। इस पेड़ का तकिया जमीन और आसमान नहीं। ग्रन्थों-पोथियों में इसका जिक्र है। अक्लों वाले आलम फाजल इसके बारे में ज्यों का त्यों बयान नहीं कर सकते क्योंकि यह वर्णन करने वाली चीज नहीं। कोई कामिल आमिल ही प्रेम को समझ सकता है, आम दुनियां इससे बेखबर है। हाफिज साहब फरमाते हैं अगर तू हमारा जमाती है तो तू सब पन्नों को धो दे क्योंकि ईश्क का ईल्म लिखने में नहीं आता।

प्रेम का स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता। मालिक और प्रेम मे कोई भेद नहीं। मालिक प्रेम है और प्रेम मालिक है दोनों चैतन्य और कथन से बाहर हैं। अनुभव से ही प्रेम अमृत चखा जाता है। प्रेम के बारे में सारे बयान दूर से इशारे करना है। प्रेमी तो नमक की पुतली की तरह है जो समुद्र की सार लेने गई पर वापिस ही नहीं आई। प्रेम उस परवाने की तरह है जो दीपक की लाट के पास जाकर वापिस नहीं आता। जिस तरह गूंगा गुड़ खाकर प्रसन्न होता है लेकिन उस रस को बयान नहीं कर सकता उसी तरह प्रेम रस अनुभव में आकर भी किसी तरह बयान नहीं किया जा सकता।

शेष अगले अंक में .....

धन्य अजायब

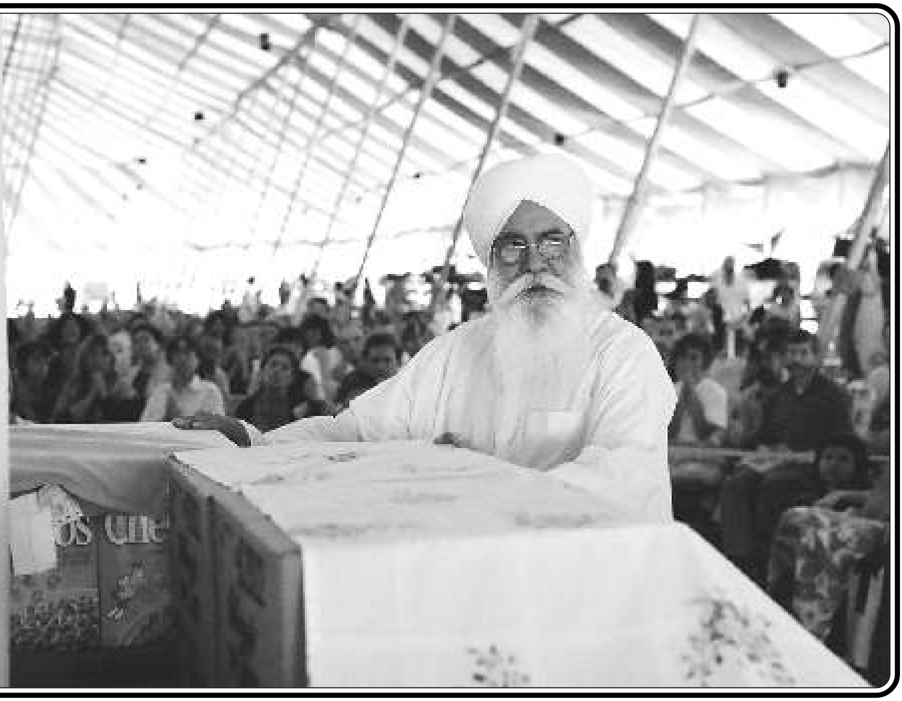

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 5 से 9 जनवरी 2011 तक नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नज़दीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067

फोन - 09 833 00 4000